विद्यार्थियों से जुड़ाव के अर्थपूर्ण तरीक़ों को बनाए रखना

मालविका राजनारायण और जितेन्द्र शर्मा

अज़ीम प्रेमजी स्कूलों का फोकस

अज़ीम प्रेमजी स्कूल, फ़ील्ड में किए जाने वाले स्कूली शिक्षा के हमारे समूचे काम का अविभाज्य हिस्सा हैं। इन स्कूलों का मुख्य उद्देश्य यह दिखाना है कि अच्छी और निष्पक्ष शिक्षा उस तरह की परिस्थितियों और सीमाओं में काम करते हुए भी सम्भव है जिनमें सरकारी ग्रामीण स्कूल (अथवा पब्लिक स्कूल) काम करते हैं। यह न सिर्फ़, आमतौर पर स्वीकृत इस धारणा का खण्डन करने के लिए किया जा रहा है कि वंचित पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चे सीख नहीं सकते, बल्कि उन विशेष व्यवहारों को प्रस्तुत करने के लिए भी किया जा रहा है जिन्हें पब्लिक स्कूल निष्पक्षता और गुणवत्ता को बेहतर बनाने की लिए अपना सकते हैं। हमारा लगातार यह प्रयास होता है कि हमारे अधिकांश विद्यार्थी कक्षा अनुरूप योग्यताओं को हासिल करें। साथ ही यह प्रयास भी होता है कि वे अन्य प्रासंगिक व आयु-उपयुक्त कौशल/ क्षमताएँ हासिल करें जैसे कि संप्रेषण, क्राफ़्ट व टीमों के साथ काम करना और दूसरों के प्रति लचीलापन व संवेदनशीलता रखने जैसे रुझान/ प्रवृत्तियाँ भी हासिल करें।

इस लेख में छत्तीसगढ़, कर्नाटक, राजस्थान और उत्तराखण्ड में काम कर रहे 8 अज़ीम प्रेमजी स्कूलों के अनुभवों पर विचार किया गया है। इन स्कूलों ने *कोविड19-* महामारी के दौरान आसपास के गाँव और क़स्बों के बच्चों की शिक्षागत ज़रूरतों पर ध्यान दिया। यह सारे स्कूल देश के सर्वाधिक दूरदराज की वंचित जगहों पर स्थित हैं जहाँ पर डिजिटल माध्यम से सीखना सम्भव नहीं है। शुरुआती दौर में जब ऑनलाइन तरीक़े को अपनाया गया तो हम अपने सिर्फ़ 40 प्रतिशत विद्यार्थियों तक पहुँच सके और हमने देखा कि उनके साथ भी यह तरीक़ा प्रभावी साबित नहीं हो रहा था। इस स्थिति में स्कूल टीम ने शिक्षण-शिक्षार्जन प्रक्रिया के बहुत से ब्योरों पर पुनर्विचार किया और विद्यार्थियों के साथ जुड़ने के विभिन्न तरीक़ों को विकसित किया। हमने इस मुख्य उद्देश्य के साथ विद्यार्थियों को जोड़ने के सार्थक तरीक़े तलाशने शुरू किए कि उन्होंने अब तक अपनी परिस्थितियों के कारण जो कुछ सीखा था उसे भूले बग़ैर वे अपने सीखने को जारी रखें। अतः हमारे समस्त प्रयास इन बिन्दुओं के इर्द-गिर्द संयोजित थे — **क)** इस बात को सुनिश्चित करना कि सभी कक्षाओं के हमारे सारे विद्यार्थियों के पास बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान में एक समुचित योग्यता का स्तर मौजूद हो और **ख)** अधिकतम सीखने के लिए सारे सम्भव उपायों और उपलब्ध संसाधनों का सबसे प्रभावी इस्तेमाल करना।

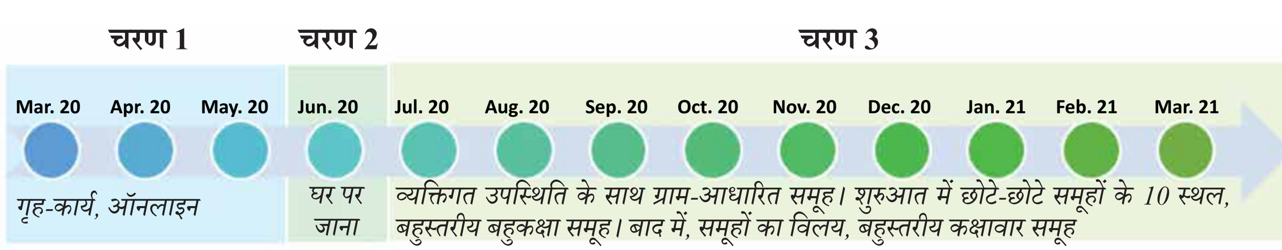
विद्यार्थियों के साथ जुड़ाव के विभिन्न माध्यम

ऑनलाइन माध्यम

साल 2020 में हमारे बहुत-से शिक्षकों के पास निजी लैपटॉप नहीं थे। इसलिए शोध के या सामग्री तैयार करने के ऑनलाइन तरीक़ों के साथ सामंजस्य स्थापित करना उनके लिए एक दुष्कर कार्य हो गया था। ऐसे में शिक्षकों ने एक-दूसरे से सहयोग करने और सीखने का तरीक़ा अपनाया। विद्यार्थियों से जुड़ाव के पहले चरण में ऑनलाइन माध्यम के एक आकलन से पता चला कि स्मार्ट फ़ोन की सुलभता, नेटवर्क कनेक्टिविटी, डेटा रिचार्ज के लिए संसाधन, उपकरणों को भाई-बहनों के साथ साझा करना, इन सभी कारणों ने ऑनलाइन शिक्षा को कम व्यावहारिक बना दिया था और बहुत से बच्चों को इससे बाहर कर दिया था।

वर्कशीट आधारित जुड़ाव

सामान्यतौर पर वर्कशीट शिक्षार्थियों को तब दी जाती है जब उन्हें किसी अवधारणा से अवगत करा दिया जाता है। ख़ुद से सीखने की सोच पर आधारित ऐसी वर्कशीट तैयार करने का विचार शिक्षकों के लिए पूरी तरह से नया था, जिसमें शिक्षक का सहयोग न्यूनतम हो। इस चुनौती के साथ एक और मुद्दा



टोंक, राजस्थान में विद्यार्थियों के साथ जुड़ाव की टाइम लाइन

यह था कि विभिन्न क्षमताओं वाले विद्यार्थियों के अनुरूप इसे कैसा रूप दिया जाए। और उन विद्यार्थियों के साथ क्या किया जाए जो अभी बुनियादी साक्षरता कौशलों से ही जूझ रहे थे या संगीत, कला और शारीरिक शिक्षा जैसे विषयों के लिए क्या किया जाए? लगभग आठ सप्ताह तक इसे तैयार करने, वितरित करने और वर्कशीट पर बच्चों के जवाबों का आकलन करने के बाद शिक्षकों ने इस माध्यम में अनेक दिक़्क़तें पाईं। इनकी विषयवस्तु को पढ़ने और समझने में बच्चों की असमर्थता से लेकर शिक्षकों के पास वर्कशीटों को समझाने के लिए समय के अभाव और बच्चों के लिए अभिभावकों और भाई-बहनों द्वारा वर्कशीट भरने तक — शिक्षकों ने यह निष्कर्ष निकाला कि वर्कशीट को तैयार करने में जितना प्रयास किया जा रहा था वह विद्यार्थियों के सीखने में परिणित नहीं हो रहा था।

बहुकक्षा समूहों के साथ समुदाय स्थलों में काम

विद्यार्थियों की व्यक्तिगत उपस्थिति में उनके साथ जुड़ाव का काम केवल 12-10 विद्यार्थियों के एक छोटे-से बहुकक्षा समूह के साथ शुरू हुआ था। इस बात पर ध्यान दिए बिना कि कोई शिक्षक किस विषय को पढ़ाने के विशेषज्ञ हैं, बुनियादी साक्षरता और गणितीय कौशलों के विकास और उन्हें आगे बढ़ाने पर ज़ोर दिया गया। इसलिए सभी शिक्षकों ने बच्चों के सीखने की योजना ऐसी विशिष्ट विषयवस्तुओं के इर्द-गिर्द तैयार की जो विभिन्न विषयों की अवधारणाओं को समाहित करने के साथ-साथ, मुख्य रूप से, समझ के साथ पढ़ने और तेज़ी से लिखने पर ध्यान केन्द्रित करती थीं। पुस्तकालय की क़िताबों का भी इस्तेमाल बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि जगाने के लिए किया गया।

सामान्यतः स्कूलों को सभी विद्यार्थियों तक पहुँचने के लिए विविध तरीक़े अपनाने पड़े। सब के साथ सामुदायिक कक्षाएँ लगाने की परिस्थितियाँ नहीं होने पर कई तरह के तरीक़ों का इस्तेमाल किया गया। उदाहरण के लिए, उधमसिंह नगर के स्कूल में शिक्षकों ने 5 अलग-अलग तरीक़े इस्तेमाल किए, जो थे — वीडियो कॉल, व्हाट्सऐप पर सामग्री साझा करना, वर्कशीट, व्यक्तिगत रूप से घर-घर जाना और कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थियों तक पहुँचने के लिए सामुदायिक कक्षाएँ लगाना। कुछ विद्यार्थी दो से तीन तरीक़ों के साथ जुड़ने में समर्थ थे। लेकिन जिन विद्यार्थियों तक नहीं पहुँचा जा सका उनके लिए एक बहुत छोटे समूह में सामुदायिक कक्षाएँ लगाने के लिए घर-घर जाना ही एकमात्र विकल्प था। इन सब कामों का मतलब था हमारे शिक्षकों के लिए बहुत भागमभाग और थकाने वाले दिन, लेकिन इससे विद्यार्थियों के सीखने के अर्थ में कोई ख़ास लाभ भी नहीं मिल रहा था।

पिछले वर्ष हमारे जीवन का एक आम दिन

टोंक में जब हमने व्यक्तिगत उपस्थिति में गाँव-आधारित समूह अध्ययन शुरू किया तो हमें 10 जगहों को कवर करना था। विद्यार्थी प्राथमिक और उच्च प्राथमिक के छोटे समूहों में रोज़ाना लगभग डेढ़ घण्टे के लिए इकट्ठे होते थे। यहाँ ये गतिविधियाँ होती थीं :

- प्रतिदिन, सबके समक्ष डायरी पढ़ना, दूसरी स्थानीय जानकारियों और दिन की योजनाओं को साझा करना।
- बड़े समूह की सामान्य गतिविधियाँ – पुस्तकालय की क़िताबों का उपयोग, चुनी हुई विषयवस्तु या विषय पर चर्चा।
- छोटे समूह-कार्य या तो साझी गतिविधि पर आधारित होते थे या विद्यार्थियों की क्षमताओं के स्तर पर।
- कुछ कला गतिविधियों के साथ समापन होता था जैसे चित्र बनाना, क्राफ़्ट, गाना, ड्रम बजाना आदि।

कक्षा 2 के विद्यार्थियों के लिए एक सत्र

कोविड-19 की शुरुआती सुरक्षा प्रोटोकोल प्रक्रियाओं के बाद आमतौर से सत्र हल्के व्यायाम और एक जगह पर कूदना, योग और शरीर को तानने जैसी शारीरिक गतिविधियों या फिर किसी सरल खेल के साथ शुरू होता था। इसके बाद कुछ समय के लिए ध्यान लगाना और पिछली कक्षा की बातों को याद करना होता था। इसके बाद सभी विद्यार्थी हिन्दी/ अँग्रेज़ी कविताएँ गाते थे (एक दिन छोड़कर कहानी सुनाई जाती थी)। तत्पश्चात उस कहानी, कविता, उनके अनुभवों या किसी चित्र के बारे में द्विभाषीय संवाद/ बातचीत की जाती थी। कभी-कभी शिक्षक किसी विषय से सम्बन्धित श्रव्य/ दृश्य संसाधनों का इस्तेमाल करते थे ताकि सीखने में बच्चों की रुचि को जगाया जा सके। बच्चों को हिन्दी और अँग्रेज़ी, दोनों भाषाओं में कहानी की क़िताबें और बच्चों का साहित्य पढ़ने के लिए कुछ समय भी दिया जाता था। सत्र को रुचिकर बनाने के लिए कुछ खेलों का भी प्रयोग किया जाता था जैसे भाषा और गणित के कार्ड या चित्रात्मक खेल जिसमें बच्चे चित्र के बारे में छोटे वाक्य लिखते थे।

महामारी के दौरान सीखना

शिक्षकों द्वारा इन विविध तरीक़ों को इस्तेमाल करने के प्रयासों के बावजूद प्रत्येक स्कूल में यह पाया गया कि कक्षा के लगभग 20 प्रतिशत विद्यार्थियों को बाक़ियों की तुलना में सीखने से

जुड़ी पर्याप्त सामग्री नहीं मिल रही थी। इसके कई कारण थे : बच्चों का अपने गाँवों को चले जाना, अभिभावकों के पास फ़ोन या दूसरे उपकरण न होना जिनसे ऑनलाइन सामग्री तक पहुँचा जा सके, घरों का ऐसी दूरदराज़ की जगहों में होना जहाँ इंटरनेट का नेटवर्क बहुत ख़राब था और कठिन पारिवारिक परिस्थितियाँ आदि। अगर परिवार में अभिभावक या दूसरे बड़े पढ़े-लिखे नहीं थे या बच्चों को पढ़ाई में सहायता देने के लिए उपलब्ध नहीं थे तो बच्चों के लिए यह बहुत चुनौतीपूर्ण था कि वे अर्थपूर्ण तरीक़े से अपनी पढ़ाई को जारी रख सकें।

हमने पाया है कि महामारी ने कक्षा-अनुरूप क्षमताओं के साथ पहले से ही संघर्ष कर रहे बच्चों और उन बच्चों के बीच फ़ासला बढ़ा दिया है जिनका प्रदर्शन पहले से ही अच्छा था। वे सब बच्चे, जो बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान हासिल नहीं कर पाए थे और भी ख़राब स्थिति में आ गए क्योंकि उन्हें ऐसी सामग्री के साथ जोड़ना मुश्किल था जिसके लिए पढ़ने लिखने के बुनियादी कौशल होना ज़रूरी हों। इसी तरह पूर्व-प्राथमिक और कक्षा 1 व 2 के बच्चों को जोड़ना भी बहुत चुनौतीपूर्ण था। यदि हम सीखने में हुई हानि को ठोस अर्थ में बताएँ तो हमने यह देखा कि बहुत-से बच्चे अपनी कक्षा-स्तर के पाठ को ठीक से नहीं पढ़ पा रहे थे जबकि पहले वे ऐसा कर लेते थे और कुछ बच्चे वर्णमाला को न तो पहचान पा रहे थे न ही उसका ठीक से उच्चारण कर पा रहे थे। यदि पहले वे अपने ख़ुद के वाक्य और कहानियाँ गढ़ पाते थे तो अब वे यह करने में भी जूझ रहे थे। गणित में बहुत से बच्चे संख्याबोध और स्थानीय मान, हासिल, उधार, दशमलव जैसी अवधारणाओं के साथ संघर्ष कर रहे थे और चिह्नित विद्यार्थियों के लिए इन सबकी पुनरावृत्ति ज़रूरी थी।

हमने अपने विद्यार्थियों के मार्च 2020 के सीखने के स्तरों को सन्दर्भ के रूप में रखते हुए उनके सीखने के स्तरों की तुलना की। नीचे दी गई तालिकाओं में दिखाए गए आँकड़ों से यह पता चलता है कि हम **स्तर**-1 (कक्षा स्तर के नीचे) में विद्यार्थियों की संख्या को कम करने में सफल हुए हैं और दूसरे स्तरों को या तो यथावत रख पाए हैं या उनमें थोड़ा सुधार हुआ है। ऐसा होने के पीछे इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए कि हमने अपने अधिकांश विद्यार्थियों के साथ एक स्तर तक अकादमिक सम्पर्क बनाए रखा था। उन विद्यार्थियों के लिए सीखने की हानि की कल्पना की जा सकती है जिनकी पढ़ाई पिछले 18 महीनों से बाधित है। हमने विभिन्न स्तरों को इस तरह से श्रेणीबद्ध किया है :

स्तर-3 — वे विद्यार्थी जो कक्षा-स्तर का काम कर रहे हैं।

स्तर-2 — वे विद्यार्थी जिन्हें कक्षा-स्तर का काम करने के लिए शिक्षकों के मार्गदर्शन और सहयोग की ज़रूरत है।

स्तर-1 — वे विद्यार्थी जो अपने कक्षा-स्तर से नीचे हैं और इसलिए पहले उन्हें पिछली कक्षा की क्षमताओं पर काम करना होगा।

संज्ञानात्मक ज्ञानार्जन में हुई हानि के अलावा स्कूल की टीमों ने यह भी ग़ौर किया है कि कुछ बच्चों में व्यवहारगत बदलाव भी आए हैं क्योंकि वे एक नियमित स्वस्थ दिनचर्या और सुरक्षित स्कूली परिवेश से दूर हुए हैं। इन बदलावों में शामिल हैं, व्यक्तिगत साफ़-सफ़ाई की आदतों में कमी जैसे नाख़ून काटना, बाल काढ़ना, अपनी घावों और चोटों की साफ़ सफ़ाई करना, एकाग्रता में कमी, आक्रामक और भेदभावपूर्ण व्यवहार में बढ़ोतरी, अपनी भावनाओं पर नियंत्रण न रख पाना इत्यादि। कुछ विद्यार्थी गाली-गलौज की भाषा और ऐसी आदतें भी सीख गए थे जो उनके स्वास्थ्य और कल्याण के लिए हानिकारक हैं। तो यह एक और क्षेत्र था जिस पर स्कूलों को ध्यान देने की ज़रूरत थी।

शिक्षकों के लिए सीख और अन्तर्दृष्टि

विद्यार्थियों के साथ विभिन्न तरीक़ों से जुड़ने के कारण शिक्षकों को सीखने के अनेक अवसर मिले। साथ ही स्कूल टीमें ऐसी शिक्षणविधियों के बारे में अच्छी तरह से जान पाईं जिनके माध्यम से विद्यार्थियों का सीखना अधिकतम प्रभावी रहा। इन अनुभवों से जो कई अन्तर्दृष्टियाँ प्राप्त हुई हैं जिनसे हमें न सिर्फ़ वर्तमान बाधित परिदृश्य में मदद मिली है बल्कि जब नियमित तौर से स्कूल खुलेंगे तब भी ये उपयोगी होंगी। अन्ततोगत्वा ये हमें ज़्यादा लचीली और टिकाऊ शिक्षणविधियों की ओर ले जा सकती हैं। कुछ अन्तर्दृष्टियों का ज़िक्र संक्षेप में नीचे किया गया है।

बहुस्तरीय बहुकक्षीय शिक्षण के लिए सत्रों की योजना बनाना

विभिन्न भाषा सम्बन्धी क्षमताओं पर ध्यान देते हुए, शिक्षक किसी समान विषय या फिर पुस्तकालय की कुछ चुनिन्दा क़िताबों के माध्यम से और श्रेणीकृत वर्कशीटों का इस्तेमाल करते हुए कक्षा को आगे लेकर चलते हैं। हालाँकि यह हो सकता है कि शिक्षक के पास पूरी कक्षा के लिए एक समान योजना हो लेकिन वर्कशीटों का इस्तेमाल प्रत्येक सीखने वाले की क्षमता के स्तर का आकलन करने हेतु किया जाता है ताकि बाद की वर्कशीटों में विशिष्ट कार्यों को जोड़ा जा सके, विशेषकर उन विद्यार्थियों के लिए जिन्हें अतिरिक्त सहयोग की ज़रूरत होती है।

बुनियादी साक्षरता/ संख्या ज्ञान के शिक्षण के लिए एकीकृत पद्धति अपनाना

सभी विषयों के शिक्षक अपने-अपने सम्बन्धित विषयों के लिए अपनी नियमित पाठ योजनाओं में बुनियादी साक्षरता से जुड़े सीखने के परिणामों को समाहित करते हैं। उदाहरण के लिए कक्षा 5 के ईवीएस शिक्षक को यह भी सुनिश्चित करना होता

कक्षा 5 (जो मार्च 2020 में कक्षा 3 में थे)					
विषय	आकलन महीना, साल	कुल विद्यार्थी	स्तर- 1	स्तर- 2	स्तर- 3
हिन्दी व कन्नड़	मार्च 2020	214	50	41	93
	अगस्त 2021	213	30	64	89
गणित	मार्च 2020	214	49	48	86
	अगस्त 2021	213	36	59	88
अँग्रेज़ी	मार्च 2020	214	72	53	58
	अगस्त 2021	213	62	61	60

कक्षा 8 (जो मार्च 2020 में कक्षा 6 में थे)					
विषय	आकलन महीना, साल	कुल विद्यार्थी	स्तर - 1	स्तर - 2	स्तर - 3
हिन्दी व कन्नड़	मार्च 2020	194	44	93	57
	अगस्त 2021	192	42	94	56
गणित	मार्च 2020	194	69	73	51
	अगस्त 2021	192	44	86	62
अँग्रेज़ी	मार्च 2020	194	104	63	31
	अगस्त 2021	192	99	56	37

है कि उसके विद्यार्थी ईवीएस से सम्बन्धित पाठ को समझ सकें, उसका सार अपने शब्दों में लिख सकें और योजनाबद्ध तरीक़े से उस पर अपनी प्रतिक्रिया दे सकें — ये सब भाषा की सीख के परिणाम हैं। इस तरह विद्यार्थी सभी विषयों में अपने भाषा कौशलों का उपयोग कर सकते हैं और उनका अभ्यास कर सकते हैं।

पत्थरों से इतिहास सीखना

उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी ज़िले के मातली गाँव में स्थित अज़ीम प्रेमजी स्कूल में शिक्षक सभी स्तरों पर विषयों को समेकित कर रहे हैं। हाल ही में उन्होंने पत्थर कला का इस्तेमाल करते हुए कक्षा 6 के विद्यार्थियों को इतिहास का एक पाठ पढ़ाया। इतिहास के बारे में तथ्यों को सीखते हुए विद्यार्थियों ने अपने आसपास की प्राकृतिक सामग्री और वस्तुओं का इस्तेमाल करके उत्सुकता के साथ रचनात्मक प्रयोग किए और अपनी इन प्रक्रियाओं को उन्होंने बेहद ख़ुशी के साथ मौखिक और लिखित, दोनों रूपों में साझा किया।

अन्य योजनाएँ

उद्देश्यपूर्ण ढंग से पढ़ने और लिखने के लिए एक पूरा सत्र पुस्तकालय में रखा जाता है, जहाँ विद्यार्थी पढ़ने के लिए किसी भी क़िताब का चुनाव कर सकते हैं और फिर वे उसके हिसाब से नियत कार्य करते हैं।

इससे उन्हें अपने पढ़ने की सामग्री चुनने की, उस पर काम करने की स्वतंत्रता मिलती है और यह बच्चों की विविध रुचियों को भी पूरा करता है।

लचीले नियत कार्यों के ज़रिए लेखन का अभ्यास और उसका विकास बच्चों की पुस्तकालय कक्षा/ सत्रों के साथ जोड़ा जा सकता है और ये उनके जीवन की परिस्थितियों में निहित होने चाहिए। विद्यार्थी अपनी पढ़ी गई किसी भी क़िताब के बारे में या अपने प्रोजेक्ट के दौरान किए गए किसी भी अवलोकन के बारे में लिख सकते हैं, एक जर्नल बनाकर उसे अपने साथियों के साथ साझा कर सकते हैं ताकि वे अपने द्वारा व्यक्त किए गए विचारों पर (न कि व्याकरण पर) उनका फ़ीडबैक पा सकें।

पाठों को विद्यार्थियों के स्थानीय सन्दर्भों में निहित करना और स्थानीय संसाधनों का इस्तेमाल करके उन पाठों को विद्यार्थियों के जीवन से जोड़ना बहुत प्रभावी होता है। उदाहरण के लिए लाभ और हानि को उनके पसन्द के किसी स्थानीय व्यापार से समझाया जा सकता है जैसे कि चाट बेचने वाले के व्यापार का उदाहरण देकर।

यादगीर,कर्नाटक में विद्यार्थियों को गीत और कहानियों समेत उनकी तमाम स्थानीय लोक परम्पराओं को लेख रूप में दर्ज करने का कार्य दिया गया। बच्चों ने अपने परिवार और समुदाय के कलाकारों का साक्षात्कार लेकर इन जीवन्त परम्पराओं के इतिहासों को उजागर किया कि कैसे उनके बड़ों ने अपने बचपन में इन परम्पराओं को सीखा और आज बड़े होकर भी वे कैसे इन्हें सँजो रहे हैं। इससे अपने माता-पिता और समुदाय के बड़ों के प्रति बच्चों का सम्मान और गहरा हो गया।

बाड़मेर, राजस्थान में विद्यार्थियों को वहाँ के संक्षिप्त मानसून काल के दौरान स्थानीय संसाधनों का इस्तेमाल करते हुए वर्षा जल संचयन प्रणालियाँ बनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस गतिविधि के बाद उन्हें जल चक्र के अवलोकन और वर्षा की प्रक्रिया को समझने का मौक़ा देते हुए एक वर्कशीट बनाई गई।

अन्य अन्तर्दृष्टियाँ

यह बहुत आवश्यक है कि हम विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों और समुदाय के साथ सम्बन्धों को बेहतर करें क्योंकि इससे सीधे तौर पर विद्यार्थियों की निरन्तरता और उनके सीखने पर असर पड़ता है। महामारी के दौरान हमने देखा कि जब लोगों को यह एहसास हुआ कि उनका

अपना घर या मोहल्ला भी शिक्षा प्रदान करने की जगह हो सकती है तो स्कूल और शिक्षकों के प्रति उनका पूरा दृष्टिकोण बदल गया। इससे और भरोसा बढ़ा, मिलने-जुलने में संवेदनशीलता और प्रयासों में सहयोग बढ़ा और इस सबसे विद्यार्थियों के लिए सीखने का एक बेहतर वातावरण तैयार किया।

एक और समझ यह हासिल हुई कि अपने पूर्व विद्यार्थियों को जोड़े रखना काफ़ी लाभप्रद साबित होता है। वे समुदाय में हमारे स्थानीय प्रतिनिधि होते हैं, जिससे समुदाय को लामबन्द करने में हमें मदद मिलती है। उनकी सफलता छोटी उम्र के विद्यार्थियों को प्रेरित करती है।

इस बात पर ग़ौर करना दिलचस्प है कि ये शिक्षणशास्त्रीय अन्तर्दृष्टियाँ दरअसल वे सामान्य अपेक्षाएँ हैं जो सभी अच्छे शिक्षकों से की जाती हैं, लेकिन हम जानते हैं कि बहुत से शिक्षक इन सुझावों का अनुसरण नहीं करते। *कोविड–19* महामारी ने हमारे लिए ऐसी परिस्थितियाँ पैदा कीं कि हमें पाठ्यपुस्तक और कक्षा-केन्द्रित शिक्षण के आरामगाह से बाहर निकलना पड़ा। हमने जो कुछ भी सीखा, उसके बारे में सोचते हुए हमने एहसास किया कि हमने जो दृष्टिकोण और पद्धतियाँ अपनाईं वे किसी भी सामान्य स्कूली दिन में होने वाले शिक्षण के लिए भी ठीक हैं और जब स्कूल दुबारा खुलता है तब भी इनका इस्तेमाल जारी रखा जा सकता है।

आगे की राह

अपने विद्यार्थियों के साथ नियमित सम्पर्क में रहने और विभिन्न तरीक़ों से उन्हें अकादमिक रूप से जोड़े रखने से हमें निश्चित रूप से कुछ फ़ायदे मिले हैं। *कोविड–19* का काल भी शिक्षकों के लिए इस रूप में मददगार रहा है कि वे सीखने के विविध स्तरों को बेहतर तरीक़े से सम्भालने के योग्य हो सके हैं। बड़ा सवाल है बच्चों के सीखने में आई दरारों को विस्तार में समझना और इन दरारों को तेज़ी से भरने के ऐसे उपाय प्रयोग में लाना जो विद्यार्थियों को जोड़े रखें और साथ ही शिक्षकों या विद्यार्थियों, दोनों पर ही अनावश्यक दबाव न बनाएँ क्योंकि ऐसा करना नुक़सानदायी हो सकता है।

विद्यार्थियों के लिए हमारे पास निम्न योजना है :

1. सभी बच्चों को धीरे-धीरे नियमित स्कूली अभ्यासों और सीखने की संरचनागत दिनचर्याओं की तरफ़ पुनः उन्मुख किया जाए। यह इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि बच्चों को ज़्यादा घण्टों तक बैठना और काम करना मुश्किल प्रतीत होने लगा है।
2. हमें पहले से ही विद्यार्थियों के सीखने के नुक़सान का एहसास अच्छी तरह से है, ख़ासतौर पर भाषा और गणित में हुए नुक़सान का। इसलिए सभी शिक्षकों को अब अधिक विस्तार में जाकर यह समझने के लिए कड़ा जतन करना होगा कि विद्यार्थियों को पहले का क्या याद है और वे क्या भूल चुके हैं। सामाजिक विज्ञान और विज्ञान के विषयों के लिए यह बहुत ज़रूरी है क्योंकि इन पर हम महामारी के दौरान ज़्यादा ध्यान नहीं दे पाए।
3. हमने इस साल के बचे हुए अकादमिक सत्र में विभिन्न कक्षाओं और विषयों के लिए 'सिलेबस रिविजन' अभ्यास शुरू किया है। एक तरफ़ इस अभ्यास का सम्बन्ध किसी विषय/ कक्षा के लिए सीखने के प्रत्याशित परिणामों से है तो दूसरी तरफ़ इसका सम्बन्ध हमारे विद्यार्थियों के सीखने के वर्तमान स्तरों से है।
4. पाठ्यक्रम का यह दोहराव शिक्षण के काम का मार्गदर्शन करेगा। कुछ महीनों के लिए शुरुआती ज़ोर पिछली कक्षाओं की अवधारणाओं और कौशलों को याद कराने/ पढ़ाने पर होगा। कुछ विद्यार्थियों के लिए यह दोहराव होगा और वे पिछड़ रहे बच्चों की सहायता करने में शिक्षकों की मदद करेंगे।
5. प्राथमिक स्तर के लिए हमने विषय के सीखने के उद्देश्यों (Learning Objectives) के अनुसार वर्कशीट



एक तालाब के नज़दीक सामुदायिक कक्षा

विकसित की थीं और उन्हें पाठ्यपुस्तक अध्यायों के साथ जोड़ दिया था। ये बच्चों के सीखने के स्तरों को सुनिश्चित करने और उन्होंने पिछली कक्षाओं में जो कुछ भी सीखा था उसकी यादों को ताज़ा करने में उपयोगी होंगी। उदाहरण के लिए कक्षा 5 का कोई विद्यार्थी कक्षा 3 की वर्कशीट के साथ शुरू कर सकता है और धीरे-धीरे कक्षा 5 के स्तर तक आ सकता है।

6. हमने उन विद्यार्थियों को भी चिह्नित किया जो बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान में कमज़ोर हैं। अतः उनके लिए कुछ महीनों तक नियमित कक्षाओं के साथ-साथ अतिरिक्त सुधार कक्षाओं में इन दक्षताओं को प्राप्त करने पर ध्यान दिया जाएगा।
7. इसी तरह हमारे पास वे विद्यार्थी भी हैं जिन्होंने 2020 या 2021 में पूर्व प्राथमिक या कक्षा 1 और कक्षा 2 में स्कूल में दाख़िला लिया था। इन विद्यार्थियों के साथ ज़्यादा काम नहीं हुआ है, अतः इनके लिए अलग तरीक़े से योजना बनाने की ज़रूरत है।
8. उन विद्यार्थियों के लिए, जो वर्तमान कक्षा के स्तर के अनुरूप कुछ हद तक काम कर सकते हैं, उनके साथ हम कक्षा पाठ्यक्रम के अनुसार आगे बढ़ेंगे। इस समूह के लिए नियत कार्य अधिक समूह प्रोजेक्ट आधारित और साथ ही साथ वर्कशीटों के स्वतः सीखने के तरीक़े वाले हो सकते हैं।
9. इस पूरी योजना में संवाद, डायरी/ जर्नल लिखने के अभ्यासों, विभिन्न तरह की कलाओं, संगीत, नाटक और शारीरिक शिक्षा के लिए विशिष्ट समय नियत करके बच्चों की सामाजिक-भावनात्मक ज़रूरतों पर ध्यान देना बहुत महत्त्वपूर्ण रहेगा।

हमें *कोविड–19* के कारण आने वाले महीनों में भी किसी भी स्कूलबन्दी के लिए तैयार रहना होगा। अगर ऐसा होता है तो लॉकडाउन की पिछली अवधियों में हमने जो कुछ सीखा वह हमारे काम आएगा, क्योंकि हम तत्काल विद्यार्थियों के साथ जुड़ने के अपने विविध तरीक़ों पर लौट सकेंगे।



विद्यार्थियों द्वारा पत्थरों से बनाई गई कलाकृति



सामुदायिक कक्षाओं के लिए एक मन्दिर का इस्तेमाल



मालविका राजनारायण वड़ोदरा, गुजरात में रहने वाली एक दृश्य कलाकार हैं। साल 2017 में वे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के फ़ेलोशिप कार्यक्रम से जुड़ीं। वर्तमान में वे सभी अज़ीम प्रेमजी स्कूलों के लिए कला और संगीत की स्रोत व्यक्ति के बतौर काम कर रही हैं। साथ ही साथ वे वड़ोदरा में अपनी कला का अभ्यास भी जारी रखे हुए हैं। वे कला और शिक्षा, दोनों विषयों पर लिखना पसन्द करती हैं। उनसे malavika.rajnarayan@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।



जितेन्द्र शर्मा अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में क्षमता-निर्माण प्रयासों को समन्वित करते हैं और कई क्षेत्रों में चल रहे सभी अज़ीम प्रेमजी स्कूलों में अकादमिक समन्वय और सहयोग प्रदान करते हैं। उनके पास शिक्षक, तथा अध्यापक-शिक्षक के रूप में काम करने का कई सालों का अनुभव है। वे बच्चों और शिक्षकों, दोनों के साथ काम करना पसन्द करते हैं। उनसे jitandra.sharma@azimpremjifoundaion.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** अमिता शीरीं